Lecture - (140)

बिहार में किसान आंदोलन का वर्णन एवं स्वामी सहजानंद सरस्वती की भूमिका

— Mamta Raj
Guest Assistant Prof.
Deptt. of History.
SNSRKS, College,
Saharsa.

BA Part - 3rd.
Paper - 1st.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

प्र. बिहार मे किसान आन्दोलन का वर्णन कीजिए। स्वामि सहजानंद सरस्वती की भूमिका की आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर- . किसान आन्दोलन (बिहार)

* चम्पारण सत्याग्रह (1917)
* असहयोग आन्दोलन (1920-22) - "कर नही दो आन्दोलन"
* सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930-34) - चौकीदार कर आन्दोलन
* सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बाद से आजादी तक।

↓

1936 का अखिल भारतीय किसान सम्मेलन, बकाश्त भूमि आन्दोलन

निष्कर्ष :- स्वतंत्रता के बाद प्रथम पंच वर्षिय योजना मे कृषि को प्रथम स्थान दिया लेकिन आजादी के इतने वर्षों बाद भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

· भारत एक कृषि प्रधान देश है और यह कृषि प्राचीन काल से चला आ रहा है। मध्य काल और आधुनिक काल मे भी आय के प्रमुख स्त्रोत के रूप मे किसान ही सबसे मुख्य भूमिका निभाते है। बिहार मे भी अन्य आन्दोलन के समान ही किसान आन्दोलन को संचालित किया गया जिसमे सफलता और असफलता का संमिश्रण दिखाई पडता है।

बिहार मे 1917 मे गाँधी जी के नेतृत्व मे तीन कठिया पद्धति के विरोध मे एक सफल आन्दोलन का संचालन किया गया। जिसमे भारतीय राजनीति की दशा और दिशा दोनो को ही परिवर्तित कर दिया क्योकि सत्य और अहिंसा को अपनाकर भारत मे पहली बार गाँधी जी के नेतृत्व मे यह आन्दोलन सफल हुआ था।जो बिहार के किसान आन्दोलन का आधार बना। इसके बाद 1919 मे विद्यानंद शर्मा के नेतृत्व मे दरभंगा मे किसान आन्दोलन का संचालन किया गया लेकिन सरकार ने अपनी शक्ति का प्रयोग करते ~~समय~~ हुए इसको कुचल दिया।

सम्पूर्ण भारत मे जब असहयोग आन्दोलन प्रारंभ हुआ तो इसका प्रभाव बिहार के किसानो पर भी पड़ता है और मुहम्मद जुबैर खाँ के नेतृत्व मे मुंगेर के क्षेत्र मे किसान आन्दोलन को संचालित किया गया। असहयोग आन्दोलन के साथ बिहार मे किसानो ने कर नहीं

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

को आन्दोलन चलाकर राष्ट्रीय आन्दोलन मे सहयोग प्रदान किया लेकिन स्थिति मे सुधार यहां भी नहीं हुआ।

असहयोग आन्दोलन के बाद अखिल भारतीय स्तर पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय चौकिदारी कर नही दो आंदोलन चलाकर किसानो ने अंग्रेज नीति के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन मे साथ दिया और इसी काल मे बिहार के सबसे बड़े किसान नेता स्वामि सहआनंद सरस्वति का उदय हुआ।1928 मे बिहार मे किसान सभा का गठन पटना मे किया गया।1929 मे स्वामि सहआनंद ने पूर्ण रूप से नेतृत्व ग्रहण कर लिया और पटना के समिप बिहटा मे किसान सभा का आयोजन किया गया जिसमे लगभग 80.000 किसानो ने शामिल होकर अपनी एकता का पर्दशन किया। 1936 मे अखिल भारतीय किसान सम्मेलन का आयोजन लखनऊ मे किया गया जिसका अध्यक्ष स्वामि सहआनंद सरस्वति को बनाया गया।

स्वामि सहआनंद सरस्वति अब किसानो के अखिल भारतीय स्तर के नेता बन गए। किसानो के बलबुते ही काग्रेस मंत्रिमण्डल का गठन किया गया लेकिन इसके हित के लिए कोई भी कानून नही लाया गया। परिणाम स्वरूप कार्यानंद शर्मा के ~~रूप~~ मे नेतृत्व मे हिंसक बकाश्त भूमि आन्दोलन चलाया गया जिसको नाई, धोबी, बायकाट (बहिष्कार) आन्दोलन भी कहा गया है। गया के क्षेत्र मे यदुनंदन शर्मा अधिक सक्रिय थे। स्वामि दयानंद सरस्वति ने अंग्रेज और जमिंदार का बहुत अधिक विरोध किया था इसलिए जमिंदार विरोध के लिए इसकी आलोचना भी किया गया जो न्याय संगत नही है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि आजादी के पहले किसानो की स्थिति मे सुधार नही हुआ इसलिए अधिकांश किसान आन्दोलन भी असफल हुए। इसी लिए स्वतंत्रता के बाद प्रथम पंचवर्षिय योजना मे कृषि को प्रमुख स्थान देकर किसानो की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया गया। लेकिन अभि भी सुधार के लिए बहुत कुछ करना बाकि बाकी है।

*** *** ***

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz